



ಕೊಡವ ಮಕ್ಕಳ ಪಠಿಪ್ಪ
ಕೊಡವ ಬಾಲಬೋಧೆ
ಕೊಡವಾ ಭಾಷಾ ಪ್ರವೇಶಿಕಾ
KODAVA PRIMER



ई-पाठशाला

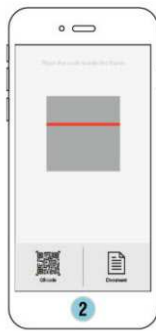
क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पॉन्स कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला **ePathshala** के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



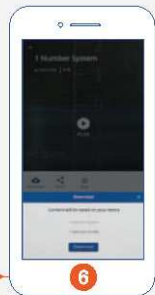
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ಕೊಡವ ಮಕ್ಕಡ ಪಡಿಪ್
ಕೊಡವ ಬಾಲಮೋಧೆ
कोडवा भाषा प्रवेशिका
KODAVA PRIMER



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

ಕೊಡವ ಮಕ್ಕಡ ಪಡಿಪ್

ಕೊಡವ ಬಾಲಮೋಧೆ

कोडवा भाषा प्रवेशिका

KODAVA PRIMER

A basal reader of Kodava alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani

Shailendra Mohan

Aleendra Brahma

Sowmya Dechamma C.C.

ISBN: 978-81-19411-83-2

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A.S.

Cover Photo: Internet images

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषाओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।


(धर्मेन्द्र प्रधान)



प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं(प्राइमरों) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024

नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

ಭೂಮಿಕಾ / Introduction

ಭಾರತ ಸದಿರಿಯೆ ಸೆ ಂಕ ಬಹುಭಾಷಿಕ ದೇಶ ರಹಾ ಹೆ ಜಹಾ ಕರ್ದಿ ಭಾಷಾಁ/ಮಾತೃಭಾಷಾಁ ಬೊಲಿ ಜಾತಿ ಹೆ. ಯಹ ದೇಶ ಕಿ ಂಕ ಮಹತ್ವಪೂರ್ಣ ವಿಶೇಷತಾ ಹೆ ಕಿ ಹಮ ಅಪನೆ ದೈನಿಕ ವ್ಯವಹಾರ ಮೆ ಕರ್ದಿ ಭಾಷಾಁ ಕಾ ಪ್ರಯೋಗ ಕರತೆ ಹೆ ಜೊ ಹಮೆ ಂಕ ಸಾಥ ಬಾಂಧತಿ ಹೆ ಂರ ಂಕಜುಟ ರಖತಿ ಹೆ. ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಾ ನೀತಿ (ಂನಿಪಿ) 2020 ಮೆ ಇಸ ಬಾತ ಪರ ಅತ್ಯಾಧಿಕ ಬಲ ದಿಯಾ ಜಾ ಹೆ ಕಿ ಭಾರತ ಕಿ ಬಹುಭಾಷಿಕ ಪ್ರಕೃತಿ ಂಕ ಬಹು ಬಡಿ ಸಂಪತ್ತಿ ಹೆ ಜಿಸಕಾ ದೇಶ ಕೆ ಸಾಮಾಜಿಕ-ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ, ಆರ್ಥಿಕ ಂರ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ವಿಕಾಸ ಕೆ ಲೀ ಕುಶಲತಾಪೂರ್ವಕ ಂಪಯೋಗ ಕರನೆ ಕಿ ಆವಶ್ಯಕತಾ ಹೆ. ಯಹ ಶಿಕ್ಷಾ ಮೆ ಹರ ಸ್ತರ ಪರ ಬಹುಭಾಷಾವಾದ ಕೊ ಬಡಾವಾ ದೆನೆ ಕಿ ಅನುಶಂಸಾ ಕರತಿ ಹೆ ತಾಕಿ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಯೆ ಕೊ ಅಪನಿ ಭಾಷಾಁ ಮೆ ಅಧ್ಯಯನ ಕರನೆ ಕಾ ಅವಸರ ಪ್ರಾಪ್ತ ಹೊ ಸಕೆ. ಸಭಿ ಭಾರತೀಯ ಭಾಷಾಁ ಮೆ ಶಿಕ್ಷಣ-ಅಧಿಗಮ ಸಾಮಗ್ರಿ ಕೆ ಸೃಜನ ಸೆ ಇಸ ಬಹುಭಾಷಿಕ ಸಂಪದಾ ಮೆ ವೃದ್ಧಿ ಹೊಗಿ ಂರ ಇಸಸೆ ವಿಕಸಿತ ಭಾರತ ಕೆ ನಿರ್ಮಾಣ ಮೆ ಬೆಹತರ ಯೋಗದಾನ ಹೊ ಸಕೆಗಾ. ಂನಿಪಿ 2020 ಕಿ ಅನುಶಂಸಾಁ ಕೆ ಅನುರೂಪ, ಪ್ರಾರಂಭಿಕ ಕಕ್ಷಾ ಕಿ ಪ್ರವೇಶಿಕಾಁ ಕೆ ವಿಕಾಸ ಕೆ ಲೀ ಂಕ ವ್ಯಾಪಕ ಂರ ಸಮಾವೇಶಿ ದೃಷ್ಟಿಕೋಣ ಕಿ ಆವಶ್ಯಕತಾ ಹೆ ಜೊ ಭಾರತ ಕೆ ಪ್ರತೀಕ ಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿ ಅನೊಖಿ ಭಾಷಾಁ ಂರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ವಿಶೇಷತಾಁ ಕೆ ಅನುರೂಪ ಹೊ. ಇನ ಪ್ರವೇಶಿಕಾಁ ಕಾ ಂದ್ರೇಶ್ಯ ಪ್ರಾರಂಭಿಕ ಕಕ್ಷಾ ಕೆ ಂತ್ರಾ ಕೊ ಪಢನೆ ಂರ ಲಿಖನೆ ಮೆ ಪ್ರವೀಣತಾ ಪ್ರದಾನ ಕರನಾ ಂರ ಂಕಿ ರಚನಾತ್ಮಕತಾ ಂರ ಆಲೋಚನಾತ್ಮಕ ಸೊಚ ಕೊ ಬಡಾವಾ ದೆನಾ ಹೆ. ಯಹ ಕಿಸಿ ಭಾಷಾ ಕೆ ಪ್ರತೀಕೆ ಂರ ಂಸಕಿ ವರ್ಣಮಾಲಾ ಕೆ ಅಕ್ಷರ ಕೆ ಬೊಧ, ಅಭಿಜ್ಞಾನ ಂವ ಂಚಾರಣ ಕಿ ಕುಂಜಿ ಹೆ. ಯೆ ಪ್ರವೇಶಿಕಾಁ ಬಙ್ಕ ಕೊ ಇನ ಅಕ್ಷರ ಕೆ ಂಕ ಯಾ ಂಕ ಸೆ ಅಧಿಕ ಸಮುಙ್ಕಯೆ ಕೆ ಅರ್ಥ ಸೆ ಭಿ ಅವಗತ ಕರಾತಿ ಹೆ ಜೊ ಂಕೆ ಸಂಯೋಜನೆ ಜೆಸೆ, ಶಬ್ದ ಮೆ ಂನ ಅಕ್ಷರ ಕಿ ಆರಂಭಿಕ, ಮಾಧ್ಯಮಿಕ ಯಾ ಅಂತಸ್ಥ ಸ್ಥಿತಿ ಸೆ ಬನತೆ ಹೆ. ಇಸಕೆ ಅತಿರಿಸ್ತ, ಯೆ ಬಾದ ಮೆ ಬತಾಁ ಜಯೆ ಅಕ್ಷರ ಕೆ ಲೆಖನ ಕೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಕೊ ಸುಗಮ ಬನಾನೆ ಹೆತು ಂದಾಹರಣ ಪ್ರಸ್ತುತ ಕರತೆ ಹೆ ಂರ ಯೆ ಶಿಶುಗೀತ/ಂಂದ/ತುಕಾಂ ಬಙ್ಕ ಕಿ ಭಾಷಾ ತಥಾ ಂಕೆ ಸಂಜ್ಞಾನಾತ್ಮಕ ಕೌಶಲ ಕೆ ವಿಕಾಸ ಮೆ ಭಿ ಸಹಾಯಕ ಸಿದ್ಧ ಹೊಗಿ.

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ಭಾರತದ ವಿಭಿನ್ನ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಭಾಷೆಗಳನ್ನು ಮಾತನಾಡುವುದರಿಂದ ಭಾರತವು ಬಹುಭಾಷೆ ಮತ್ತು ಬಹುಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಮೌಖಿಕವಾಗಿ ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಬಹುಭಾಷೆಯನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮತ್ತು ಆಹ್ಲಾದಿಸುವ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿದ್ದು, ಇದು ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಸಾಮಾನ್ಯ ಲಕ್ಷಣವಾಗಿರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ನಮ್ಮನ್ನು ಒಂದಾಗಿ ಬಂಧಿಸಿದೆ ಹಾಗೂ ಒಗ್ಗೂಡಿಸಿದೆ. ಭಾರತದ ಬಹುಭಾಷಾ ಸ್ವಭಾವವನ್ನು ಸಂಪತ್ತು ಮತ್ತು ಶಕ್ತಿಯೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಿ ಅದನ್ನು ಸಮಾಜೋ-ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ, ಆರ್ಥಿಕ ಮತ್ತು ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿಯಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಗತ್ಯತೆಯಿದೆ ಎಂಬ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ಹೊಸ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ-2020 (NEP 2020) ತೀವ್ರವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುತ್ತದೆ. ಇದು ಶಿಕ್ಷಣದ ಪ್ರತಿ ಹಂತದಲ್ಲೂ ಬಹುಭಾಷಾ ವಾದದ ಪ್ರಚಾರವನ್ನು ಶಿಫಾರಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಕಲಿಯುವವರು ತಮ್ಮ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿಯೇ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲು ಅವಕಾಶವನ್ನು ನೀಡಿದಂತಾಗುತ್ತದೆ. ಎಲ್ಲಾ ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೋಧನೆ-ಕಲಿಕೆ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಬಹುಭಾಷಾ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ ಮತ್ತು 'ವಿಕಸಿತ ಭಾರತದ' ದೃಷ್ಟಿಕೋನಕ್ಕೆ ಉತ್ತಮ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಲು ಅವಕಾಶ ಮಾಡಿಕೊಡುತ್ತದೆ. NEP

2020 ರೊಂದಿಗೆ ಪೂರ್ವ-ಹಂತದ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಭಾರತದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪ್ರದೇಶದ ವಿಶಿಷ್ಟ ಭಾಷಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಗುಣಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಸಮಗ್ರ ಮತ್ತು ಅಂತರ್ಗತ ವಿಧಾನದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಈ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳು ಆರಂಭಿಕ ಹಂತದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಭಾಷಾ ಪ್ರಾವೀಣ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಸೃಜನಶೀಲತೆಗೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ಪ್ರೇರೇಪಿಸುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ವರ್ಣಮಾಲೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಲು, ಗ್ರಹಿಸಲು ಮತ್ತು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಕಲಿಕೆಯ ಕೀಲಿಯಾಗಿ ಅವು ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತವೆ. ಈ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳು ಅಕ್ಷರಗಳ ಒಂದು ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ರೂಪಾಂತರ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತವೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ ಪದದ ಆದಿ, ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂತ್ಯದ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿನ ಅಕ್ಷರಗಳು. ಅಂತಿಮವಾಗಿ, ಇದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಕ್ಷರ ಬರೆಯುವ ಅಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತದೆ. ಪ್ರಾಸಗಳು ಮತ್ತು ಹಾಡುಗಳು ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿನ ಭಾಷಾ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಅರಿವಿನ ಕೌಶಲಗಳು ಮತ್ತು ಸ್ಮರಣೆಯನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತವೆ.

ಮಾರ್ಚ್, 2024

ಮೈಸೂರು

ಪ್ರೊ. ಶೈಲೇಂದ್ರ ಮೋಹನ

ನಿರ್ದೇಶಕ

ಭಾರತೀಯ ಭಾಷಾ ಸಂಸ್ಥಾನ, ಮೈಸೂರು

CIIL-NCERT Primer Series: Kodava Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Bacharaniyanda Appanna, Retired Lecturer, Kushalnagar, Kodagu, Karnataka

K.M. Janaki (Ranu), Retired Lecturer, Kushalnagar, Kodagu, Karnataka

Sowmya Dechamma C.C., Professor and Head, Centre for Comparative Literature, University of Hyderabad, Hyderabad

Kuttappa M S, Secretary TCSC, Bengaluru

U.A. Somanna, Independent Researcher, Bengaluru

Kodava Reviewer

Bhamini Raghavaiah, Project Associate, CIIL, Mysuru

Kannada Reviewer

Nagaraju S, Senior Resource Person, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Assistance

Belliappa B N, Clerical Assistant, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ಕೊಡವ ಬಾಲಬೋಧೆಯನ್ನು ಬಳಸುವ ಬಗೆ

ಮಾತೃಭಾಷೆಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಅನೇಕ ಭಾಷೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಮಗುವಿನ ಪರಿಚಿತತೆ ಅದರ ಸರ್ವಾಂಗೀಣ ಬೆಳವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೀರುವ ಅತ್ಯಂತ ನಿರ್ಣಾಯಕ ಅಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ವಿವಿಧ ಭಾಷೆಗಳ ಆರಂಭಿಕ ಪರಿಚಯವು ಮಗುವಿನ ಅರಿವಿನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳ ವಿಸ್ತರಣೆಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಮಕ್ಕಳ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಮತ್ತು ಸಮಗ್ರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವಲ್ಲಿ ಮಾತೃಭಾಷೆ ಪ್ರಮುಖ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ. ಸ್ಥಳೀಯ ಭಾಷೆ ಎಂದೂ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ಮಾತೃಭಾಷೆಯು, ಮಕ್ಕಳು ತಮ್ಮ ಭಾವನೆಗಳು ಮತ್ತು ಆಲೋಚನೆಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚು ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಲು, ಅವರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಜಗತ್ತನ್ನು ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅರಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಅಂತೆಯೇ, ಶಿಶುವಿಹಾರ ಮತ್ತು ಅಂಗನವಾಡಿಗಳಂತಹ ಕಲಿಕೆಯ ಹೊಸ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಮನೆಯ ಪರಿಚಿತ ಸ್ಥಳದ ವಿಸ್ತರಣೆಯು ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಉತ್ಸಾಹ ಮತ್ತು ಆನ್ವೇಷಣಾ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯಕವಾಗುತ್ತದೆ. ಮಾತೃಭಾಷೆ-ಆಧಾರಿತ ಬಹುಭಾಷಾ ಶಿಕ್ಷಣದ ಪ್ರತಿಪಾದಕರಲ್ಲಿ ಪ್ರಮುಖವಾಗಿರುವ ಯುನೆಸ್ಕೋ (UNESCO), ಮಕ್ಕಳ ಬೋಧನಾ ಭಾಷೆ ಅವರದೇ ಸ್ವಂತ ಮಾತೃಭಾಷೆಯಾಗಿದ್ದಾಗ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಂದ ಓದುವ ಸಾಧ್ಯತೆ 30% ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುತ್ತದೆ ಎಂದು ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ಪುರಾವೆಗಳ ಮೂಲಕ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿದೆ. ಮಾತೃಭಾಷೆಯಲ್ಲಿನ ಆರಂಭಿಕ ಶಿಕ್ಷಣವು ಕಲಿಕೆಯ ಗುಣಮಟ್ಟವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಆ ಮೂಲಕ, ನಂತರದ ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಸವಾಲುಗಳಿಗೆ ದೃಢವಾದ ಅಡಿಪಾಯವನ್ನು ಹಾಕುತ್ತದೆ. ಮಾತೃಭಾಷಾ ಆಧಾರಿತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಅಗತ್ಯತೆಯು ಈಗಾಗಲೇ ಸಾಬೀತಾಗಿರುವ ವಿಷಯವಾಗಿದ್ದು, ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರದ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು ಕೂಡಾ ಸ್ವಂತ ಮಾತೃಭಾಷೆಗಳ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಆರಂಭಿಕ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಬಲಪಡಿಸುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ.

ಮಾತೃಭಾಷಾ ಆಧಾರಿತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಅಗತ್ಯತೆಯನ್ನು ಒತ್ತಿ ಹೇಳುವ 2020ರ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ ಮತ್ತು 2022ರ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ ಚೌಕಟ್ಟು ಸಹ ಭಾರತದ ವಿವಿಧ ಮಾತೃಭಾಷೆಗಳ ಮೂಲಕ ಆರಂಭಿಕ ಕಲಿಕೆಗೆ ಪ್ರೇರೇಪಣೆಯನ್ನು ನೀಡಿದೆ. ಎಂಟು ವರ್ಷದ ವರೆಗಿನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಬೋಧನಾ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿ ಮಾತೃಭಾಷೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಒತ್ತು ನೀಡಲಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಇದರ ಭಾಗವಾಗಿ, ಮೂರರಿಂದ ಐದು ವರ್ಷದೊಳಗಿನ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಭಾರತದ ವಿವಿಧ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಾಲವಾಟಿಕಾ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವ ಕ್ರಮವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ. ಮನೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ವಾತಾವರಣವನ್ನು ಪ್ರೈಮರ್‌ಗಳು ಮತ್ತು ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳಂತಹ ಕಲಿಕೆಯ ಸಾಧನಗಳಿಗೆ ವಿಸ್ತರಿಸುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಉತ್ಸಾಹವನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾಗಿದ್ದು, ಇದೇ ಉದ್ದೇಶವನ್ನು ಈ ಬಾಲವಾಟಿಕಾ ಕೈಪಿಡಿಗಳ ಸರಣಿಯೂ ಹೊಂದಿದೆ. ವರ್ಣರಂಜಿತ ಚಿತ್ರಗಳು ಮತ್ತು ಲಯಬದ್ಧ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಸೃಜನಶೀಲ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಮತ್ತು ಸಂತೋಷವನ್ನು ಈ ಪ್ರೈಮರ್‌ಗಳು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಅದರ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯ ಅಭ್ಯಾಸಗಳಿಂದ ಉತ್ತಮಗೊಳಿಸುತ್ತವೆ.

‘ಕೊಡವ’ ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದ ಪ್ರಮುಖ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದಾಗಿದೆ. ಇದು ದ್ರಾವಿಡ ಭಾಷಾ ಕುಟುಂಬಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ಭಾಷೆಯಾಗಿದ್ದು, ಕೊಡಗು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮೂಲ ನಿವಾಸಿಗಳಾದ ಕೊಡವರು (ಉಪಜಾತಿಗಳನ್ನೂ ಸೇರಿ) ಮತ್ತು ಕೆಲವು ಬುಡಕಟ್ಟು ಜನಾಂಗಗಳ ಮೂಲ ಭಾಷೆಯಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಎರಡು ಪ್ರಬೇಧಗಳಿವೆ: ಮೇಂದಲೆ (ಉತ್ತರ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯ ಕೊಡಗಿನಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡುವ ಭಾಷೆ) ಮತ್ತು ಕಿಗ್ಗಟ್ (ದಕ್ಷಿಣ ಕೊಡಗಿನಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡುವ ಭಾಷೆ). ಕುಟುಂಬದ ಇತಿಹಾಸ, ಆಚರಣೆಗಳು, ಸಂಪ್ರದಾಯಗಳನ್ನು ಪಟ್ಟೋಲೆ (ಪಟ್ಟೆ = ತಾಳೆ, ಓಲೆ = ಎಲೆ)ಯಲ್ಲಿ ಪುರಾತನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬರೆದಿಡಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಗಣನೀಯ ಸಂಖ್ಯೆಯ ಕೊಡವ ಭಾಷಿಕರು ಹಲವು ರಾಷ್ಟ್ರಗಳಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವುದರಿಂದ ಅಧಿಕೃತ ಜನಗಣತಿಗೆ ಕೊಡವ ಮಾತನಾಡುವವರ ನಿಖರವಾದ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು ಕಷ್ಟಕರವಾಗಿದೆ. ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡವು ಪ್ರಮುಖ ಬೋಧನಾ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಕಲಿಕೆಯ ಆರಂಭಿಕ ಹಂತಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿಲ್ಲ. ಮಾತೃಭಾಷಾ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಒತ್ತು ನೀಡುವುದು ಮತ್ತು ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯತ್ತ ಗಮನ ಹರಿಸುವುದು ಒಂದು ಪ್ರಮುಖ ಹೆಜ್ಜೆಯಾಗಿದ್ದು ‘ಕೊಡವ ಬಾಲಬೋಧೆ’ಯ ರಚನೆಯು ಬೋಧನಾ ವಾತಾವರಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವಗೊಳಿಸುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮಹತ್ವವಾದ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ.

‘ಕೊಡವ ಬಾಲಬೋಧೆ’ ಒಂದು ಚಿತ್ರಾತ್ಮಕ ಪುಸ್ತಕವಾಗಿದ್ದು, ಶಿಕ್ಷಕರು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕಲಿಸಲು ಮತ್ತು ಕಲಿಯಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಶತಮಾನದಿಂದಲೂ ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬರೆಯಲು ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯನ್ನು ಬಳಸುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ, ಈ ಪ್ರೈಮರ್‌ನಲ್ಲಿಯೂ ಅದನ್ನೇ ಬಳಸಲಾಗಿದೆ. ನಾಲ್ಕು ಕೊಡವ ಪದಗಳ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕೊಡವ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಲಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಈ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಸದ ಶಿಶುಗೀತೆಯೊಂದನ್ನು ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಮಕ್ಕಳ ಸೃಜನಶೀಲ ಆಸಕ್ತಿಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಲು ಮತ್ತು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಎಲ್ಲಾ ನಾಲ್ಕು ಪದಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಗಳಿಂದ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಧ್ವನಿ ಪರಿಚಯ: ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರವನ್ನು ನೋಡಿ ವಸ್ತುವಿನ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಆ ವಸ್ತುವಿನ ಹೆಸರು ಯಾವ ಧ್ವನಿಯಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುತ್ತದೆಂದು ಶಿಕ್ಷಕರು ಪ್ರಶ್ನಿಸುತ್ತಾರೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ: 'ಅ' ಎಂಬ ಪದದಲ್ಲಿ 'ಅ' ಎಂಬ ಆರಂಭಿಕ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಅಕ್ಷರ ಪರಿಚಯ: ಶಿಕ್ಷಕರು ಮೊದಲು 'ಅ' ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ ಹೇಗಿರುತ್ತದೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಕೆಲವು ಪದಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು, ಅವುಗಳಲ್ಲಿ 'ಅ' ಎಂಬ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸಲು ಹೇಳಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಮೂರು ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ 'ಅ' ಅಕ್ಷರದ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ, ಅದರ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ.

ಓದುವಿಕೆ: ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರವನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾ ಅವರ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಅಕ್ಷರಗಳ ಮೇಲೆ ಬೆರಳುಗಳನ್ನಿಟ್ಟು, ಧ್ವನಿಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾ, ಎಡದಿಂದ ಬಲಕ್ಕೆ ಶಬ್ದವನ್ನು ಓದುತ್ತಾರೆ. 'ಅ' ಅಕ್ಷರವಿರುವ ಇತರ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಓದುತ್ತಾ, 'ಅ' ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಹಾಗೂ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾ, ಆರಂಭದಲ್ಲಿ, ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ 'ಅ' ಧ್ವನಿ ಇರುವ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸುವುದನ್ನು ಶಿಕ್ಷಕರು ಅವರಿಗೆ ಹೇಳಿಕೊಡುತ್ತಾರೆ.

ಶಿಕ್ಷಕರು 'ಅ' ಅಕ್ಷರವಿರುವ ಮೂರು-ನಾಲ್ಕು ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಕರಿಹಲಗೆಯ ಮೇಲೆ ಬರೆಯುವಾಗ ಮಕ್ಕಳು ಅಲ್ಲಿರುವ 'ಅ' ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಓದುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಒಬ್ಬರ ಬಳಿಕ ಒಬ್ಬರಂತೆ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಪದಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಪ್ರಪಂಚದಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಅವರು ಅದನ್ನು ಗುರುತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಹಾಗೂ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ, ಈ ಪದಗಳನ್ನು ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಓದುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಒಂದೊಂದೇ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಗುರುತಿಸಲು ತಿಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ಒಂದು ಮಗು ಅದನ್ನು ಓದುತ್ತಿರುವಾಗ ಉಳಿದ ಮಕ್ಕಳು ಅದನ್ನು ಜೊತೆಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಇದನ್ನು ಗುಂಪು ಓದುವಿಕೆ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.

ಬರವಣಿಗೆ: ಶಿಕ್ಷಕರು ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಬರೆಯುವಾಗ ಲೇಖನಿ ಯಾವ ಕಡೆಯಿಂದ ಯಾವ ಕಡೆಯವರೆಗೆ ಚಲಿಸುತ್ತದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುತ್ತಾರೆ. ಆ ಬಳಿಕ ಮಕ್ಕಳು ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಅವರಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅವರೇ ಅದನ್ನು ಬರೆಯುವಾಗ ಹಾಗೂ ಓದುವಾಗ ಶಿಕ್ಷಕರು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಮಕ್ಕಳ ಭಾಷೆಯ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಎರಡು-ಮೂರು ಸಾಲಿನ ಪುಟ್ಟ ಪುಟ್ಟ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಶಬ್ದಗಳೊಂದಿಗೆ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಅದನ್ನು ಹಾಡುತ್ತಾ, ಓದುತ್ತಾ ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ಶಾಲೆಯ ಗ್ರಂಥಾಲಯದಲ್ಲಿರುವ ಕಥೆ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಓದಿ ಆ ಕಥೆಯನ್ನು ಕುರಿತು ಮಕ್ಕಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಾವು ಮೊದಲು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ನಂತರ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಮುಂದಿನ ಹಂತಕ್ಕೆ ತಯಾರುಮಾಡಬೇಕು. ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿರುವ ಪದಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅಕ್ಷರ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಮಾದರಿಯಷ್ಟೇ. ಮಕ್ಕಳು ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪದಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಆ ಪದಗಳನ್ನು ಕೂಡ ಹೇಳಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಅರಿವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಬಹುದು (ಉದಾಹರಣೆಗೆ 'ಅ' ಅಕ್ಷರದಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುವ ಕೆಲವು ಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ).

ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯ ಹಾಡುಗಳು/ಪದಗಳು/ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಅನುಕೂಲಕ್ಕಾಗಿ ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಪದಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವಂತೆಯೇ ಅನುನಾಸಿಕವಿರುವಲ್ಲಿ ಅನುಸ್ವಾರಗಳನ್ನು ಬಳಸಲಾಗಿದೆ. ಒಂದೆರಡು ಕಡೆ ಗುರುತು ಉಳಿಯಲೆಂದು ಅನುನಾಸಿಕ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಬಳಿಕ ಕನ್ನಡ ಬರವಣಿಗೆಯ ರೀತಿಯನ್ನೂ ಚೌಕ ಆವರಣದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ.

ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯ ವಿಶೇಷವಾದ 'ಇ', 'ಎ', 'ಏ' ಹಾಗೂ 'ಒ' ಕಾರಗಳನ್ನು ಈ ಹಿಂದೆ ಪ್ರಕಟಗೊಂಡಿರುವ 'ಕೊಡವ ಅರಿವೋಲೆ' ಹಾಗೂ ಕೊಡವ ವ್ಯಾಕರಣಗಳಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಬಳಸಲಾಗಿದೆಯಲ್ಲದೆ, ಅವುಗಳ ದೀರ್ಘಾಕ್ಷರಗಳನ್ನೂ ಕೊಡಲಾಗಿದ್ದು, ಇವುಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ಕ್ರಮವನ್ನು ಶಿಕ್ಷಕರು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಲಿಸಬೇಕು. ಕೊಡವ ಭಾಷೆಯ ಕೆಲ ಧ್ವನಿಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಲು ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಕೆಲವು ಅಕ್ಷರಗಳಿಗೆ ವಿಶೇಷ ಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ತೋರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದರಿಂದ ಪದಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ರೀತಿ ಅವರಿಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುತ್ತದೆ.

ಕೇದಲ್ ಉಳ್ಳ ಗೆರೆನ ನೋಟಿತ್, ತಂದ ಜಾಗತ್ಲ್ ಅನ್ನನೆ ಬುಡ್ತುವಕ್ ನೋಟಿ.

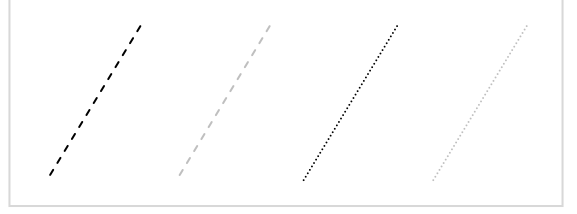
ನೇರ ಗೆರೆ :



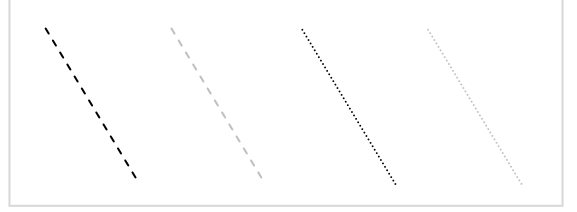
ಅಡ್ಡ ಗೆರೆ :



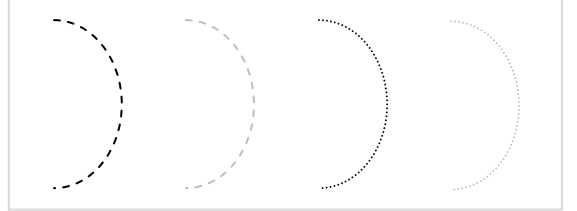
ವಾರೆ ಗೆರೆ 1 :



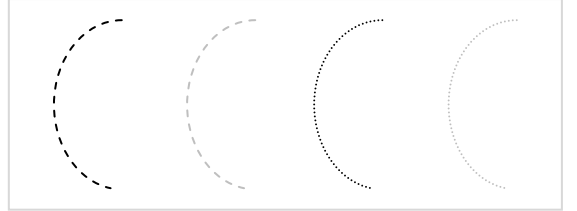
ವಾರೆ ಗೆರೆ 2 :



ತಿರ್ಕ್ ಗೆರೆ 1 :



ತಿರ್ಕ್ ಗೆರೆ 2 :



ಸೂಚನೆ: ಉಪಾದ್ರಿ, ಮಕ್ಕಕ್ ಪೆನ್/ಪೆನ್ಸಿಲ್ ಎನ್ನನೆ ಪುಡ್ಚಂಡ್ ಉಳ್ಳ ಜಾಗತ್ಲ್ ಗೆರೆ ಬುಡ್ತೋಂದ್ ವಿಣ್ಣಿಕೊಡ್ಕೊಂಡು.

ಕೊಡವ ವರ್ಣಮಾಲೆ

ಸ್ವರಾಕ್ಷರ

ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಀ	ಁ	
ಁ	ಂ	ಃ	಄	ಅ	ಆ	
ಇ	ಈ	ಉ	ಊ	ಋ	ೠ	ಡ
ಢ						

ವೈಂಜನಾಕ್ಷರ

ಯ	ರ	ಕ	ಘ	ಙ	ಚ	ಝ
		ಘ	ಙ	ಚ	ಝ	ಞ
		ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ತ
		ಡ	ಢ	ತ	ಥ	ದ
		ನ	ಪ	ಫ	ಬ	ಭ
		ಮ	ಯ	ರ	ಲ	ವ

ಅ

ಅಗೆ

ಪೈರು

ನಾಟಿಕ್ ಬೋಂಡು ಅಗೆ
ಅಣ್ಣಯ್ಯ ಬೆಚ್ಚತ್ ಪಗೆ
ಬೇಲಾಕ್ ಎಡ್ಕಂಡು ಬಗೆ



ಅರಾಪೆ

ಸೋಸುಗ

ಅಮ್ಮೆ ಪಣ್ಣಾ

ಬೆಳಚಿ ಹಣ್ಣು

ಅಡೆಪದ್ದಾ

ರಣಹದ್ದು

ಅ

ಅ

ಅ

ಆ

ಆಣೆ

ಮೊಳೆ

ಬಾಣೆಲ್ ಮೇವದಾ ಆಡ್
ತಾಳ ಕೊಟ್ಟಿಯಂಡ್ ಆಡ್
ಮಾಡ್‌ನ ಪಾಪ ನೀ ಬೂಡ್



ಆಣ್

ಗಂಡಸು

ಆಮಡೆ

ಚಪ್ಪಟೆ ಕಲ್ಲು

ಆಟ್

ಕುಣಿತ

ಆ

ಆ

ಆ

ಇ

ಇರ್ ಪ್

ಇರುವೆ

ಸಕ್ಕರೆ ಬುದ್ದಲ್ಲಿ ಇರ್ ಪ್
ಬಾಡೆಲ್ ಪರ್ ಪದಾ ಪರ್ ಪ್
ಒಲೆಲ್ ತಿತ್ತನ ಉರ್ ಪ್



ಇಕ್ಕಳ

ಇಕ್ಕಳ

ಇರ್ಂಬ್

ಕಬ್ಬಿಣ

ಇಂಜಿ

ಶುಂಠಿ

ಇ

ಇ

ಇ

ಈ

ಈರುಳ್ಳಿ

ಈರುಳ್ಳಿ

ಕಣ್ಣಿ ಕರಿಕ್ ಈರುಳ್ಳಿ
ಅಗ್ರಣಿಕ್ ಬೋಂಡು ಬೊಳ್ಳುಳ್ಳಿ
ಮಕ್ಕ ಪಡಿಕಂಡು ಸಿರಿಬಳ್ಳಿ



ಈರ್

ಕುಯ್ಯಿ

ಈಚಿ ಗಿಡ

ಈಚಲು ಗಿಡ

ಈತ್‌ಪಳ್ಳಿ

ಹೆಣ್ಣುನರಿ

ಈ

ಈ

ಈ

ಇ

ಇಟ್ಟಿಗೆ

ಇಟ್ಟಿಗೆ

ಮನೆ'ಕಟ್ಟೋಕ್ ಬೋಂಡು ಇಟ್ಟಿಗೆ
ಮಂಡೆಕ್ ಚೂಡೋ ಮಲ್ಲಿಗೆ
ತಿಂಬಕ್ ಚೋದ್ ನೆಲ್ಲಿಗೆ



ಇರಾಟ್

ಕತ್ತಲೆ

ಇಳಿ

ಇಳಿ

ಇಡ್

ತೊಡು

ಇ

ಇ

ಇ

ಈ

ಈಟಿ

ಭರ್ಜಿ

ಪಡೆ ಕಳತ್ ಇರೊಂಡು ಈಟಿ
ಕಟ್ಟ್ ಪೊಟ್ಟಿಕ್ ಆಂಡು ಬೂಟಿ
ಕೊಡವತಿ ಪೊಂಗಡ ಚಿಪ್ಪರ ನೋಟಿ



ಈಡ್

ಕೋಲಾಟ

ಈಪ್

ಎಳೆ

ಈಂಡಿಕಾಡ್

ಈಜಿಕಾಡು

ಈ

ಈ

ಈ

ಉ

ಉಡ್‌ಂಬ್

ಉಡ

ಕೋಟೆ ಪತ್ತುವಕ್ ಉಡ್‌ಂಬ್
ದೇವಡ ತಿರಿಕೆಲ್ ತಡ್‌ಂಬ್
ಕಾರೋಣನೆಕ್ಕೋಲು ನಂಬ್



ಉಟ್ಟಿ

ಅಕ್ಕಿಹುಳ

ಉಣ್ಣೆ

ಉಣುಗು

ಉಮ್ಮತ್ತ ಪೂ

ಉಮ್ಮತ್ತಿ ಹೂ

ಉ

ಉ

ಉ

ಲೂ

ಲೂನ್

ಒಸಡು

ಪಲ್ಲ ಅಳಪಕ್ ಬೋಂಡು ಲೂನ್
ಕೊದಚಿತ್ ಬೆಂದುನ ಕಾಣ್
ದಂಡ್ ಬೆರ ಕೂಡಿತ್ ಚಾಣ್



ಲೂಕ

ಭಾರ

ಲೂಕ್

ಬಾಚು

ಲೂತ್

ಹೀರು

ಲೂ

ಲೂ

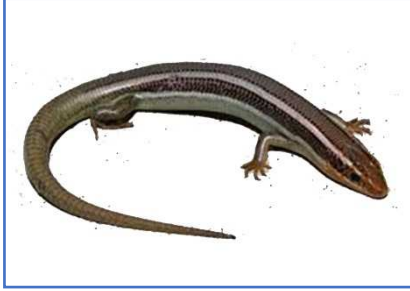
ಲೂ

ಎ

ಎಕ್ಕಾಟೆ

ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆ

ಉಂಬಕ ಬಾತ್ ಎಕ್ಕಾಟೆ
ಗುಡ್ಡತರೊಳಾಕ್ ಪುಳ್ಳಿಕುಟ್ಟೆ
ಬಾವಕ್ ಬೋಂಡು ನೇರೆ ಬಟ್ಟೆ



ಎರಿ

ಜೇನುಗೂಡು

ಎರಣೆ

ಹಾವುರಾಣಿ

ಎರ್ಪಚ್ಚ

ಕಂಬಳಿಹುಳು

ಎ

ಎ

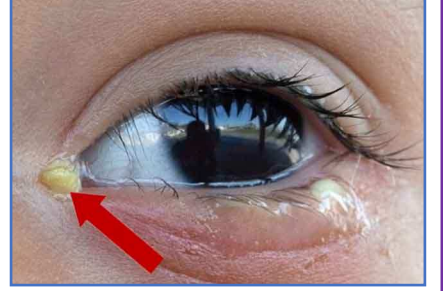
ಎ

ಏ

ಏರಿ

ತೆವರಿ

ಬೇಲ್‌ರ ಕರೆಕಾಂಡು ಏರಿ
ತೋಡ್ ಕಡಕಂಡು ಪಾರಿ
ಮನೆ ಮನೆ ಪೋಕತೆ ದೂರಿ



ಏಚಿಪಣ್ಣ್

ಸಳ್ಳೆಹಣ್ಣು

ಏರಕೋರೆ

ಅಂಕುಡೊಂಕು

ಏಂಬೆ

ಕಣ್ಣಿನ ಜಾರು

ಏ

ಏ

ಏ

ಎ

ಎಟ್ಟ್

ಎಂಟು

ನಾಲ್ ನಾಲ್ ಕೂಡಿ ಎಟ್ಟ್
ಬೋಟೆಲ್ ಎಡ್ ನೀ ಬಟ್ಟ್
ಉಂಡಿತ್ ಪತ್ತ್ ನೀ ಕಟ್ಟ್

8



ಎಡ್

ತೆಗಿ /
ತೆಗೆದುಕೋ

ಎಳ್ಳತ್

ಬರವಣಿಗೆ

ಎಡೆ

ಎಡೆ

ಎ

ಎ

ಎ

ವ

ವಣಿ

ವಣಿ

ಅಟ್ಟಕ್ ಪತ್ತುವಕ್ ವಣಿ
ಕಾವೇರಿ ಪೊಳೆಲ್ ದೋಣಿ
ರಾಜಂಡ ಪೊಣ್ಣೊ ರಾಣಿ



7



ವಳ್

ವಳು

ವರ

ತುಂಬಾ

ವಳ್

ವಳು

ವ

ವ

ವ

ಎ

ತೆರಾಮೆ

ಜರೀಗಿಡ

ಓಣಿಕ್ ಚಿಂಗಾರ ತೆರಾಮೆ
ಬಾಲಂಗ್ ಚಿಂಗಾರ ಪೆರಾಮೆ
ಕುಡ್‌ಚಿತ್ ಬಂದಂವ ಪೊರಮೆ



ತೆಂಗೆ

ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ

ಚೋರಂಗೆ

ನಿಂಬೆಹಣ್ಣು

ಎ

ಎ

ಎ

ವ

ಚೇಲೆ

ದಟ್ಟ

ಕುಪ್ಪಿಯಕ್ ಕೆಟ್ಟಂಡು ಚೇಲೆ
ಕೂಳಿತೆರೆಕಾಂಡು ಪಾಲೆ
ಪೊಂಗಡ ಕೆಮಿಕಾಂಡು ವಾಲೆ



ತೇಲೆಮರ

ಬಸರಿಮರ

ತೇರಣ

ಮದರಂಗಿ

ಬೇಳೆ

ಬೇಳೆ

ವ

ವ

ವ

ಐ

ಐಮರ

ಹಜಾರದ ಪೀಠ

ಐನ್‌ಮನೆಕ್ ಬೋಜ ಐಮರ
ಬಟ್ಟೆ ತಿರ್‌ವಲ್ಲಿ ಕೈಮರ
ಕುಡ್‌ಚಿತ್ ಕಳಿಕತೆ ತಾರಾಮಾರ



ಐನ್‌ಮನೆ

ಮೂಲಮನೆ

ಐಪಣೆ

ನಾಟಿ ಕೆಲಸ

ಐರಿ

ಆಚಾರಿ

ಐ

ಐ

ಐ

ಒ

ಒಡಿಕತ್ತಿ

ಪಾರಂಪರಿಕ ಕತ್ತಿ

ಪಡೆಬೂಮಿಕಾಂಡು ಒಡಿಕತ್ತಿ
ಅರೆಚೇಲೆಕಾಂಡು ಪೀಚೆಕತ್ತಿ
ಕೊಯಿಪಣಿಕಾಂಡು ಕೊಯಿಕತ್ತಿ



ಒಟ್ಟಿ

ಅಕ್ಕಿರೊಟ್ಟಿ

ಒಕ್ಕಿ

ಒಕ್ಕಣೆ

ಒಡ್ಡ್

ಗುಡಿಸು

ಒ

ಒ

ಒ

ಓ

ಓಡ್

ಕಾವಲಿ

ಒಟ್ಟಿ ಆತುವಕ್ ಓಡ್
ಬಾಳೋಪಾಟ್‌ನೊಮ್ಮ ಪಾಡ್
ಮಾಡತೆ ನೀ ದಾಕೂ ಕೇಡ್



ಓಣಿ

ಕಾಲುದಾರಿ

ಓಲಿ

ತಾಳೆಗರಿ

ಓಟ್

ಓಟ

ಓ

ಓ

ಓ

ರ
ಬಿ

ಪೊಗೆ

ಹೊಗೆ

ಪುಳಿಕತ್ತಲೇಂಗಿ ಬಪ್ಪ ಪೊಗೆ
ಬೆಕ್ಕತೆ ನೀ ಪಗೆ
ನಾಟಿಕ್ ಬೋಂಡು ಅಗೆ



ಪೊಳೆ

ಬೆಳೆ

ಪೊಳೆ

ನದಿ

ಕೊಡೆ

ಕೊಡೆ

ರ
ಬಿ

ರ
ಬಿ

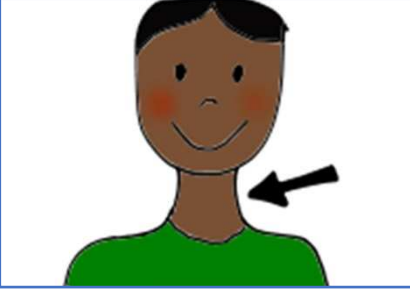
ರ
ಬಿ

ರ
ಷ

ಪೋಳೆ

ಕೊಕ್ಕರೆ

ಕಾಪಳಾತೂರ್ ಪೋಡೆ
ಚುಣ್ಣ ಪೊಜ್ಜೂರ್ ಗೋಡೆ
ಸೇರಲ್ ಅಳಕಂಡು ಮೋಡೆ



ಪೋಳೆ

ಕುತ್ತಿಗೆ

ಮೋಡ

ಮೋಡ

ಪೋಡೆ

ಹೇಂಟೆ

ರ
ಷ

ರ
ಷ

ರ
ಷ

ಅಂ

ಅಂಜಿ

ಐದು

ಅಂಗಯಿ ಬೆರ ನೋಟ್ ಅಂಜಿ
ಪೊಲಾಕ ಬೂವದಾ ಮಂಜಿ
ಪಂದಿಕ್ ಬೂಕ್ ಕಂಜಿ



ಅಂಬಟೆ

ಅಮಟೆಕಾಯಿ

ಅಂಗಡಿ

ಅಂಗಡಿ

ಅಂಗಯಿ

ಅಂಗೈ

ಅಂ

ಅಂ

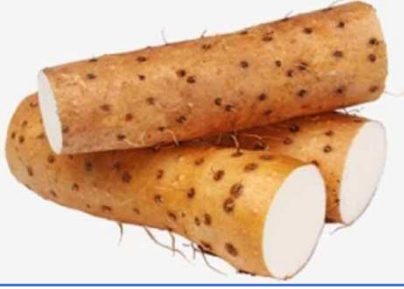
ಅಂ

ಕ

ಕಯಿಪಕೆ

ಹಾಗಲಕಾಯಿ

ಪಂದತ್ ತೂಂಗಿತ್ ಕಯಿಪಕೆ
ಕಾಡ್ಲ್ ಕಟ್ಟ್ವ ಪಾವಕೆ
ಮೇಲ್ಡೀ ಬರೆ ಬರೆ ಕೋವಕೆ



ಕಳ್ಂಜಿ

ಗೆಣಸು



ಕಂಡೆ

ಆಲೂಗಡ್ಡೆ



ಕವೆ

ಕವಲುಕಡ್ಡಿ

ಕ

ಕ

ಕ

ಗ

ಗಂಜಿ

ಪಾತ್ರೆ

ಪಾಲ್ ಕಾಚ್‌ವಕ್ ಗಂಜಿ
ಕೋಳಿಕರಿ ಅದ್ ನಂಜಿ
ಬಾಕೊಂಡು ಕೂಳ್ ಬೆಂಜಿ



ಗದ್ದಳ

ಭಕ್ಷ್ಯ
ಭೋಜನ

ಗಮನ

ಸುವಾಸನೆ

ಗಣ್ಣ್

ಗಿಣ್ಣು

ಗ

ಗ

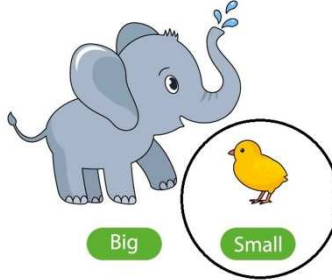
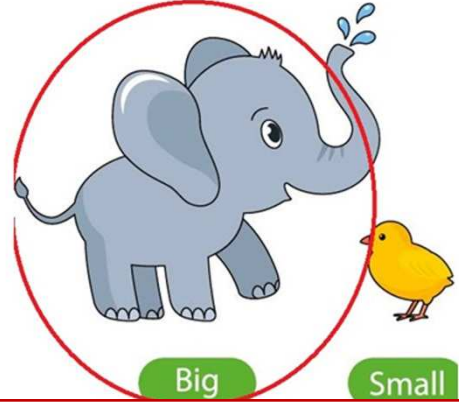
ಗ

ಜ

ಬಲ್ಂಜನೆ

ದೊಡ್ಡದಾಗಿ

ಮರತೊರ್ ಚಕ್ಕೆ ಬಲ್ಂಜನೆ
ಅವ್ವ ಮಾಡ್ಚಿ ಕುಂಞಿನ ಮಂಜಣೆ
ಗೊಡತ್ ಪಾವುಡ್ ವಲ್ಂಜನೆ



ಮಂಜಣೆ

ಅತೀಮುದ್ದು

ಚೆರ್ಂಜನೆ

ಸಣ್ಣದಾಗಿ

ಚಂಜಾದಿ

ಒಡನಾಡಿ

ಜ

ಜ

ಜ

ಚ

ಚಟ್ಟುವ

ದೋಸೆ ಅಲೆ

ದೋಸೆ ಮರಿಪಕ್ ಚಟ್ಟುವ
ನೀರ್ ಕಾಚುವಕ್ ಕುಟ್ಟುವ
ಬಿತ್ತನ ಕುರ್ವದ್ ಪುಟ್ಟುವ



ಚಕ್ಕಿ

ಹಲಸು

ಚಣ್ಣೂರ

ಚಂದ್ರ

ಚಂಗ್

ಶಂಖ

ಚ

ಚ

ಚ

ಜ

ಜಫೆ

ಉದ್ದ ಕೋಲು

ಬೇಲಿ ಕೆಟ್ಟವಕ್ ಜಫೆ
ಗುದ್ದಲಿ ಎಡ್ತಂಡ್ ಕಫೆ
ಬಾಣ ದುಂಬಾ ಬಾತ್ ಮಫೆ



ಜಳಂಬ್

ಜಾಲಿಸು

ಜಡೆಕಾರ

ನಾಗರಹಾವು

ಜಡೆ

ಜಡೆ

ಜ

ಜ

ಜ

ಇ

ಇಂಡ್

ಏಡಿ

ಚುಟ್ಟಿತ್ ತಿಂಗಂಡು ಇಂಡ್
ಚೋರಂಗಿ ಮುರ್ಚಿತ್ ಪುಂಡ್
ಮಕ್ಕ ಕಳಿಪಕ್ ಚೆಂಡ್



ಪೂಂಇ

ಬೆಕ್ಕು

ಇಂಡ್ರಕ್

ಚೇಳು

ಕುಂಇ

ಮಗು

ಇ

ಇ

ಇ

ಟ

ಕಾಟ

ಕಸ

ಪಟ್ಟಿಲ್ ಒಡ್ಡ್ ನೀ ಕಾಟ
ನೋಟಿತ್ ಬಾ ಒಮ್ಮ ತೋಟ
ಮಕ್ಕ ಪಡಿಕಂಡು ಪಾಟ



ಗೂಟ

ಗೂಟ

ಮಟ್ಟ

ಒಣಗಿದ
ತೆಂಗಿನ ಗರಿ

ಕೋಟಂಜಿ

ಬಸವನಹುಳು

ಟ

ಟ

ಟ

ಡ

ಡಬ್ಬಿ

ಡಬ್ಬ

ತೊರಂದಿತ್ ನೋಟ್‌ನ ಡಬ್ಬಿ
ಕುಂದ್ ಬರಿಲೋರ್ ಅಬ್ಬಿ
ನಿಂದಂಡ್ ನೋಟ್‌ನ ನೆಬ್ಬಿ



ಪೊಡ

ಬಿದಿರಿನ ಬಲೆ

ಗಡ

ಗಿಡ

ಪೋಡ

ಮೋಡ

ಡ

ಡ

ಡ

ಣ

ಪಣಪುಳಿ

ಉಪ್ಪಾಗೆ

ಪುಳಿನೀರ್ ಕಾಚುವ ಪಣಪುಳಿ
ಮರದುಂಬ ತೂಂಗಿತ್ ಕಿತ್ತುಳಿ
ಪಾರಕ್ ನಲ್ಲದ್ ಪೇರುಳಿ



ಪಣ

ಹಣ

ಟೂಣಪ್

ಡುಮ್ಮ

ಒಣಕ್

ಒಣಗಿಸು

ಣ

ಣ

ಣ

ತ

ತಳಿಯ

ತಟ್ಟೆ

ಕತ್ತಿತ್ ಬೆಯ್ಯಾ ನೀ ತಳಿಯ
ಅಳ್ತಂಡ್ ಉಂಬಕ್ ಪಲಿಯ
ಅಟ್ಟತ್ ನೆಲ್ಲಾರ ತುಳಿಯ



ತಂಬಟೆ

ತಮಟೆ

ತಕ್ಕಡಿ

ತಕ್ಕಡಿ

ತಡಾಚಿ

ಡುಮ್ಮಿ

ತ

ತ

ತ

ದ

ದಡ್ಡೆ

ಮರಿ ಹಾಕಿರುವ
ಹಂದಿ

ಕುಟ್ಟಿಯಡವ್ವನೆ ದಡ್ಡೆ
ಕಣ್ಣಿಕರಿ ಮಾಡ್ ಗಡ್ಡೆ
ಮಕ್ಕ ಕೂಡಿತದ ಗುಡ್ಡೆ



ದರ್‌ಗ್

ತರಗಲೆ

ದಳ

ಅಡಿಪಾಯ

ದಬ್ಬೆ

ಉದ್ದದ ಕತ್ತಿ

ದ

ದ

ದ

ನ

ನರಿ

ಹುಲಿ

ಅತ್ಯಳ ಪುಡಾಚತ್ ನರಿ
ನಲ್ಲ ತಕ್ಕ ನೀ ಪರಿ
ಒಟ್ಟಿಕ್ ಕುಂಬಳ ಕರಿ



ನರುಮರ

ದಾಲ್ಚಿನ್ನಿ
ಮರ

ನಳ

ನೆರಳು

ನಮ್ಮೆ

ಹಬ್ಬ

ನ

ನ

ನ

ಪ

ಪತ್ತಾಯ

ಕಣಜ

ನೆಲ್ಲ ಕೂಟ್‌ವಕ್ ಪತ್ತಾಯ
ಮಾಡತೆ ನೀ ಒತ್ತಾಯ
ಮಂಗಲಕಾರಂಗ್ ಕುಪ್ಪಾಯ



ಪಡಿ

ಬಾಗಿಲು

ಪಣ್ಣ್

ಹಣ್ಣು

ಪಯ್ಯ

ಹಸು

ಪ

ಪ

ಪ

ಬ

ಬಣ್ಣ

ಜೀಡ

ಬಲೆ ನೆಜ್ಜತದ ಬಣ್ಣ
ಕೆಲಸಕ್ ಪೋಚಿ ಅಣ್ಣ
ಒಳಚಿತ್ ಮರೆಲದ ಕಣ್ಣ



ಬಂಡುಳಿ

ಮಾದಳ

ಬಡಿಯ

ಬಡಿಗೆ

ಬತ್ತಗೆ

ಕಲ್ಲಂಗಡಿ

ಬ

ಬ

ಬ

ಮ

ಮಣ

ಮರಳು

ತೇಕಪಣಿಕಾಂಡು ಮಣ
ಪೇಟೆಕ್ ಪೋಪಕ್ ಪಣ
ಮಕ್ಕಕಿರಂಡು ನಲ್ಲ ಗುಣ



ಮಕ್ಕ

ಮಕ್ಕಳು

ಮಂಜ

ಹಳದಿ

ಮಳು

ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ

ಮ

ಮ

ಮ

ಯ

ಯರ್ಚಿ

ಮಾಂಸ

ಮಂಗಲತೂಟಕ್ ಯರ್ಚಿ
ಪೇಟೆಕ್ ಪೋನಕ ಕರ್ಚಿ
ಪಡೆಯಾಳಿಕಿರಂಡು ಬರ್ಚಿ



ಯಾಲ

ಏಲಕ್ಕಿ

ಯಾಕ

ಒಟ್ಟಲು
ಪಾತೆ

ಯರಾತೆ

ಕೆತ್ತು

ಯ

ಯ

ಯ

ರ

ರಝ

ರಞ್

ಮೇಂಗಯಿ ಕೊಡೆಬರಿ ರಟ್ಟೆ
ಹಾರಂಗಿ ಪೊಳೆಲುಂಡ್ ಕಟ್ಟೆ
ಪೊಲಾಕ ತಿಂಗಂಡು ಮುಟ್ಟೆ



ಪರಂಬ್

ಮೈದಾನ

ರಸಬಾಳೆ

ರಸಬಾಳೆ

ರೋಬಸ್ಟ್

ಕಾಫಿ ತಳಿ

ರ

ರ

ರ

ಲ

ಲಗಾಮ್

ಕಡಿವಾಣ

ಕುದರೆರ ದುಂಡ್ಡ್ ಲಗಾಮ್
ಉಂಡಿತ್ ಮಾಡ್ ನೀ ಆರಾಮ್
ಗೆದ್ದಕ ಕೊಡ್ಪದೇ ಇನಾಮ್



ಲಂಗ

ಲಂಗ

ಪಲಂಬ್

ಚಾಪೆ

ಪಿಲ್ಲ್

ಹುಲ್ಲು

ಲ

ಲ

ಲ

ವ

ವನಲಿ

ಒಂದ್ರಿ

ಅಕ್ಕಿ ವನ್ತುವಕ್ ವನಲಿ
ಕಾಕತೆ ಮೂಡಿನ ಚಿನಾಲಿ
ಐಲಾಟ ರಾಮನೆ ತೆನಾಲಿ



ವಲ್ಂಜಿ

ನೂಣ

ವರ್

ನಿದ್ರಿಸು

ವಾಲಗ

ಓಲಗ

ವ

ವ

ವ

ಸ

ಸಂಬಾರ

ಧನಿಯ

ಕೂಟ್‌ಕರಿಕಾಂಡು ಸಂಬಾರ
ಕುಡಿಕೆ ಪಣಿಕಾರ ಕುಂಬಾರ
ಪೇಟೆಲ್ ನೀಕೆನ್ನ ಜಂಬಾರ



ಸರ

ಸರ

ಸರಡ್

ನೆಕ್ಲೇಸು

ಸಾಲ್

ಸಾಲು

ಸ

ಸ

ಸ

ಹ

ಹಡಗ್

ಹಡಗು

ಕಡತ್‌ಲ್ ಪೋಪದ ಹಡಗ್
ನಂಗಡ ನಾಡ್ ಕೊಡಗ್
ಮೋಡತ್ ಇಡಿಪದೆ ಗುಡ್‌ಗ್



ಹಡಪೆ

ಕೈಚೀಲ

ಹಂಚಿ

ಹೆಂಚು

ಹ

ಹ

ಹ

ಛ

ನಳ

ನೆರಳು

ಬಯ್ಯನ್ನೆ ಬಪ್ಪದ ನಳ
ಒಕ್ಕಿ ಇಡ್ವಕ್ ಕಳ
ನೀರ್ ಕೆರೆಯದೆ ಕೊಳ



ಮಾಳ

ಮಾಳ

ಕಳ

ಕಣ

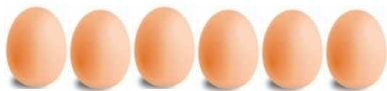
ದಳ

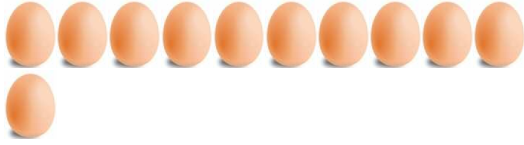
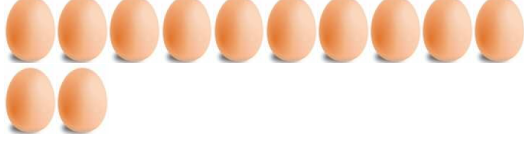
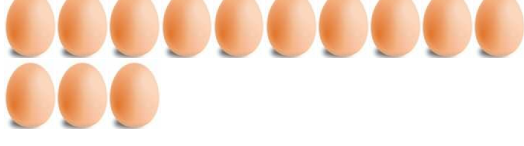
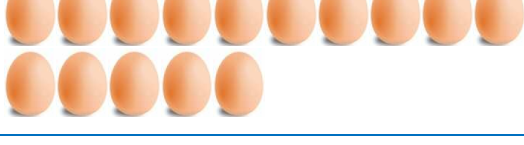
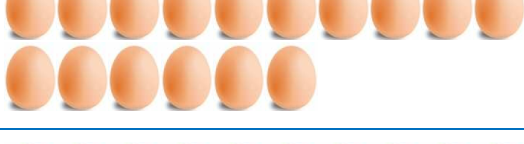
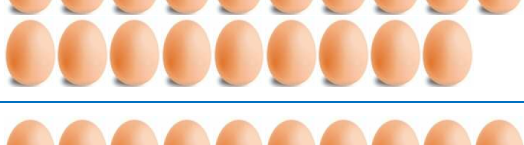
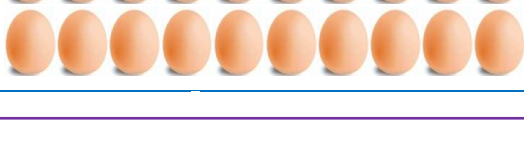
ಹೂದಳ

ಛ

ಛ

ಛ

ಲೆಕ್ಕ ಕುಟೋ			
೧	ಒಂದ್		1
೨	ದಂಡ್		2
೩	ಮೂಂದ್		3
೪	ನಾಲ್		4
೫	ಅಂಜಿ		5
೬	ಆರ್		6
೭	ಏಳ್		7
೮	ಏಟ್ವೆ		8
೯	ಒಯಿಂಬದ್		9
೧೦	ಪತ್ತ್		10

೧೧	ಪನ್ನೊಂದ್		11
೧೨	ಪನ್ನೆರಂದ್		12
೧೩	ಪದಿಮೂಂದ್		13
೧೪	ಪದ್‌ನಾಲ್		14
೧೫	ಪದ್‌ನಂಜಿ		15
೧೬	ಪದ್‌ನಾರ್		16
೧೭	ಪದ್‌ನೇಳ್		17
೧೮	ಪದ್‌ನೇಟ್ವ		18
೧೯	ಪತ್ತೊಯಿಂಬದ್		19
೨೦	ಇರ್‌ವದ್		20

၁	၁	၁	၁	
၂	၂	၂	၂	
၃	၃	၃	၃	
၄	၄	၄	၄	
၅	၅	၅	၅	
၆	၆	၆	၆	
၇	၇	၇	၇	
၈	၈	၈	၈	
၉	၉	၉	၉	
၁၀	၁၀	၁၀	၁၀	

၈၈	၈၈	၈၈	၈၈	
၈၉	၈၉	၈၉	၈၉	
၉၀	၉၀	၉၀	၉၀	
၉၁	၉၁	၉၁	၉၁	
၉၂	၉၂	၉၂	၉၂	
၉၃	၉၃	၉၃	၉၃	
၉၄	၉၄	၉၄	၉၄	
၉၅	၉၅	၉၅	၉၅	
၉၆	၉၆	၉၆	၉၆	
၉၇	၉၇	၉၇	၉၇	
၉၈	၉၈	၉၈	၉၈	
၉၉	၉၉	၉၉	၉၉	

ಕನ್ನಡ ವರ್ಣಮಾಲೆ

ಸ್ವರಾಕ್ಷರಗಳು

ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಉ	ಊ	ಋ	ಎ
ಏ	ಐ	ಒ	ಓ	ಔ	ಅಂ	ಅಃ	

ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳು

ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ
ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಞ
ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ
ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ
ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ
ಯ	ರ	ಲ	ಲೃ	ಲಃ
ಷ	ಷಃ	ಶ	ಷ	

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala .

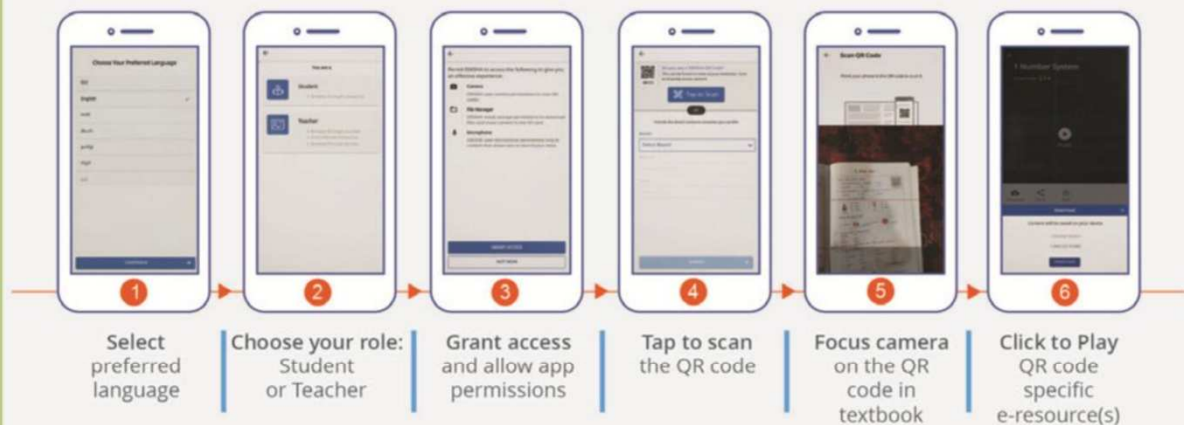


For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA .



For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

**PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR
BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)**

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in